

## कृषि विपणन

फसल कटाई के बाद किसानों को अपनी फसल/उत्पाद को अपने खेत पर संग्रह करने की आवश्यकता होती है, उसे प्रशंसकरण करना होता है। वर्गीकरण होता है और बाद में बाजार में बेचने से पहले पौकिंग करना होता है। कृषि विपणन में निम्न प्रक्रियाओं का शामिल किया जा सकता है।

१. फसल कटाई के बाद उसको इकट्ठा करना
२. उत्पाद का प्रसंस्करण करना
३. कोटि के अनुसार उत्पाद का वर्गीकरण करना
४. उत्पाद की विक्री तय करना जब कीमत लाभप्रद है।

विपणन प्रणाली को सुधारने के लिए सरकार द्वारा किए गए उपाय।

१. नियमित मण्डियां
२. सहकारी कृषि विपणन समितियां
३. भण्डार गृह सुविधाओं का प्रावधान
४. सस्तायातायात चुमा भातायात
५. सूचना का प्रसार
६. न्यूनतम समर्थन कीमत नीति

ग्रामीण जनसंख्या के लिए रोजगार के गैर कृषि क्षेत्र

१. पशु पालन – भारत में रोजगार का महत्वपूर्ण गैर कृषि क्षेत्र पशुपालन है जैसे जैसे हम सिंचित क्षेत्रों से गैर सिंचित सूखे या सूखे क्षेत्रों की ओर जाते हैं, पशु पालन कृषि का महत्व बढ़ता जाता है। आपरेशन प्लड दुग्ध उत्पाद क्षेत्र में एक क्रान्ति है जो सन १९६६ में आरम्भ की गई थी इस प्रणाली के अन्तर्गत सभी सदस्य किसानों को बाजार में सामूहिक विक्री के लिए अपने दूध के उत्पाद को एकत्रित करना होता है।
२. मत्स्य पालन – केरल, महाराष्ट्र, गुजरात, तथा तमिलनाडु भारत में मछुआरों का समुदाय, मछली पकड़ने के अन्तर्वर्ती और महासागर स्त्रोतों पर लगभग समान रूप से निर्भर करता है। इस क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान २ प्रतिशत है।
३. उद्यान विज्ञान वागवानी – ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यान विज्ञान या नागवानी उत्पादक गतिविधियों में विविधीकरण

का एक अन्य क्षेत्र है। नागान उत्पादों फल, सब्जियां, रेशेदार फसलें, सुगन्धित फूल पौधे आदि शामिल होते हैं। ऊंची फसल उत्पादकता १९९१-२००३ के वर्षों के बीच के समय को बागवानी का “स्वर्णि क्रान्ति” का काल माना जाता है।

४. कटीर और घरेलू उद्योग – कुटीर और घरेलू उद्योग आय निर्माण के पारम्परिक गैर कृषि स्रोत है। परम्परा से ही इस उद्योग पर कातने, बुनने, रंगने तथा ब्लिचिंग क्रियाओं का प्रभुत्व रहा है। साबुन बनाना, गुड़िया बनाना, मशरूम की खेती तथा मधुमाक्खियों का पालन प्रमुख उदाहरण है।

### जैविक कृषि और धारणीय विकास

जैविक कृषि आधारिक रूप से वह परपाटी है जो खेती के लिए जैविक आगतों के प्रयोग पर निर्भर करती है। जैविक आगत में मूलतः पशु खाद हरी खाद शामिल है।

### जैविक कृषि क्यों?

परम्परागत कृषि की तुलना में जैविक कृषि के कुछ उल्लेखनीय लाभ हैं जो इस प्रकार हैं –

१. गैर नवीकरणीय संसाधनों के प्रयोग का त्याग करती है।
२. पर्यावरण मित्र
३. मृदा उपजाऊपन को बनाए जाती है
४. स्वास्थ्यवर्धक एवं स्वादिष्ट भोजन
५. छोटे और सीमान्त किसानों के लिए सस्ती प्रौद्योगिकी

### अति लघु उत्तरीय प्रश्न (१ अंक)

१. कृषि साख से आप क्या समझते हैं?
२. ग्रामीण विकास संबंधी चार महत्वपूर्ण समस्याओं के नाम बताइए।
३. कृषि साख के गैर संस्थागत स्रोतों की परिभाषा दीजिए।
४. जैविक कृषि से आप क्या समझते हैं?
५. कृषि साज के दो संस्थागत स्रोतों के नाम बताइए।

काम करने के योग्य एवं इच्छुक है वर्तमान में इस कार्यक्रम का नाम महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी एक्ट २००५ है।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (६ अंक)

१. भारत में बेरोजगारी के कारणों का वर्णन करें।

- धीमा आर्थिक विकास
- जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
- कृषि एवं मौसमी धन्धा
- सिचाई सुविधाओं की कमी
- संयुक्त परिवार प्रणाली
- कुटीर और लघु उद्योगों का पतन

२. बेरोजगारी की समस्या को हल करने के लिए किए गए प्रयासों की चर्चा कीजिए।

- उत्पादन में वृद्धि
- उत्पादकता में वृद्धि
- पूंजी निर्माण की ऊंची दर
- स्वयं रोजगार में लगे लोगों को अधिक सहायता
- शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन
- औद्योगिक तकनीकी में परिवर्तन
- योजनाओं में रोजगार कार्यक्रमों को अधिक महत्व

३. बेरोजगारी के आर्थिक एवं सामाजिक परिणामों की व्यवस्था कीजिए।

अ) आर्थिक परिणाम

- मानव शक्ति का अप्रयोग
- उत्पादन की हानि
- पूंजी निर्माण में गिरावट
- कम उत्पादकता

ब) सामाजिक परिणाम

- जीवन की निम्न गुणवत्ता
- अत्यधिक असमानता
- सामाजिक अशान्ति
- वर्ग संघर्ष

व्यापार (तथा धन्धों में लगे होते हैं)

४. नियमित मजदूर कौन है?

नियमित मजदूरों को स्थायी वेतन पर रख जाता है यह लोग सभी प्रकार के लाभ पाने के अधिकारी हैं।

५. मौसमी बेरोजगारी से आप क्या समझते हैं?

मौसमी बेरोजगारी से आशय यह है कि खाली मौसम में अक्सर कृषि में काम करने वाले बेकार रहते हैं वह ५ व ७ महीने तक बेरोजगार रहते हैं मौसमी बेरोजगारी की श्रेणी में रहा जाता है।

१. श्रम आपूर्ति तथा श्रम बल में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

श्रम आपूर्ति

विभिन्न मजदूरी दरों के अनुरूप श्रम की पूर्ति

काम करने वालों की संख्या स्थिर रहते हुए भी श्रम की आपूर्ति कम या अधिक हो सकती है।

श्रम बल

- वास्तव में काम कर रहे या काम करने के इच्छुक व्यक्तियों की संख्या
- क्योंकि इसे व्यक्तियों की संख्या के रूप में मापा जाता है।

२. भारत में सहभागिता की दर को समझाइए।

- शहरी क्षेत्रों में सहभागिता की दर लगभग ३४ प्रतिशत है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सहभागिता की दर लगभग ४२ प्रतिशत है।
- देश में सहभागिता की दर लगभग ४० प्रतिशत है।

३. भारत में पेशेवर ढांचे का वर्गीकरण कीजिए।

- प्राथमिक क्षेत्र – कृषि वानिकी, मछली पकड़ना खनन आदि।
- द्वितीयक क्षेत्र – निर्माण, विनिर्माण, विजली गैस आदि।
- तृतीयक क्षेत्र – व्यापार, परिवहन, संग्रहण तथा सेवाएं।

४. ग्रामीण रोजगार गारन्टी एक्ट २००५ क्या है?

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी एक्ट २००५ में लागू किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में यह एक्ट उन सभी व्यक्तियों को १०० दिन के लिए मजदूरी रोजगार की गारन्टी देता है जो निर्धनता रेखा से नीचे रहते हैं और सरकार द्वारा दी गई मजदूरी दर पर .....